बच्चों के साथ विश्वास के रिश्ते बनाना

विनीता रोचा

हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं, जहाँ यह लगता है कि लोग आसानी से एक-दूसरे पर विश्वास नहीं करते। मेरी राय में एक बच्चे में उसके स्कूल के वर्षों के दौरान विकसित किए जाने वाले कई ज़रूरी आयामों में, विश्वास निर्मित करना सामाजिक-भावनात्मक कौशल के रूप में एक प्रमुख आयाम है। विश्वास यानी मनुष्य की मनुष्यता में भरोसा। इसके पीछे भावना यह है कि आमतौर पर दूसरों के इरादे अच्छे होते हैं, लेकिन कभी-कभी जिन परिस्थितियों में वे रह रहे होते हैं, वे उन्हें लगातार डर और भरोसे की कमी के साथ काम करने और जीने के अलावा कोई विकल्प नहीं देतीं। कभी-कभी बुनियादी संसाधनों की कमी बच्चों में नकारात्मक व्यवहार, जैसे स्वयं के और अपने परिवेश के प्रति सम्मान की कमी के अलावा चोरी जैसे ग़लत आचरण को भी बढ़ावा देती है।

स्कूलों में बच्चों को मूल्यों की शिक्षा उनके अन्य विकासों के साथ-साथ ही दी जानी चाहिए, जिसके लिए लगातार और सुसंगत प्रयास की आवश्यकता है। जहाँ हम इस ओर प्रयासरत रहते हैं कि हमारे बच्चे शैक्षिक उत्कृष्टता हासिल करें, वहीं हमें ख़ुद से यह भी अवश्य पूछना चाहिए कि हम, मूल्यों को आत्मसात करने और विश्वास जैसे सामाजिक-भावनात्मक कौशलों को सीखने में बच्चों की मदद कैसे कर सकते हैं। हालाँकि, क्या विश्वास को एक सामाजिक-भावनात्मक कौशल के रूप में सिखाना सम्भव भी है?

एक सीखने वाला अनुभव

आगे आने वाला क़िस्सा, मेरे लिए भी उतना ही सीखने वाला था जितना उन बच्चों के लिए जिनके साथ मैं काम कर रही थी। अपने स्कूल के दौरों के दौरान, मैं बच्चों को पुस्तकालय जाने के लिए प्रोत्साहित करती हूँ, उनके अपने लिए किताबें चुनने में उनकी मदद करती हूँ और पुस्तकालय रजिस्टर में किताबों को जारी करवाने में सहायता करती हूँ। पुस्तकालय में रंगों से भरी व चित्रों वाली तमाम किताबों में से हर हफ़्ते कई बच्चे कम-से-कम एक किताब लेना चाहते हैं, भले ही वे इसे पूरी न पढ़ पाएँ।

मेरी कोशिश रही है कि बच्चों को प्रोत्साहित किया जाए कि वे इन किताबों को घर ले जाएँ और उनके जादू को महसूस करें। शुरुआत में बच्चों से किताबें वापस लेना एक चुनौती थी। लेकिन समय बीतने के साथ जब उनको यह बताया गया कि वे पहले ली गई किताब को वापस देने पर कोई दूसरी किताब ले पाएँगे, तो इसका सकारात्मक असर हुआ है।

पहले के दो साप्ताहिक दौरों के दौरान, मैंने कक्षा-4 के श्रीकान्त को किताब जारी करने से मना कर दिया था। स्कूल के कई अन्य लोगों की तरह, श्रीकान्त में अपनी छवि और अपने आस-पास की दुनिया को लेकर जागरूकता न के बराबर है और वह अपनी चीज़ों को लेकर भी लापरवाह-सा रहता है। स्कूल में शिक्षा की माध्यम भाषा से उसकी मातृभाषा अलग है, जिसके कारण उसे सीखने में भी कठिनाई होती है। उसके दोस्त भी इक्का-दुक्का ही हैं और शिक्षकों के बीच भी उसकी छवि एक कमज़ोर छात्र की है।

यह तीसरी बार था, जब वह मेरे पास आया। इस बार भी मैंने उसके बड़े लम्बे निवेदन पर ध्यान नहीं दिया और उसे कोई किताब जारी नहीं की, क्योंकि उसने पहले ली हुई किताब वापस नहीं की थी।

श्रीकान्त ज़िद्दी लड़का है। उसने पूरे 20 मिनट तक मुझे यह मनवाने की भरपूर कोशिश की कि वह अपनी पिछली किताब *एवरीथिंग बिग कैट्स* वापस कर चुका है। ऐसा लग रहा था कि इस बार उसे पक्का किताब चाहिए थी, इसलिए वह बार-बार मुझे उस पर विश्वास करने का अनुरोध कर रहा था। मुझे इससे पहले की एक घटना याद थी जब उसने ईमानदारी नहीं बरती थी, इसलिए मैं भी अपने निर्णय पर क़ायम रही। मैंने उसे यह स्पष्ट कर दिया कि वापस की गई किताब की रजिस्टर में एंट्री होना बहुत ज़रूरी है और रिकॉर्ड के मुताबिक़ इस बात की कोई पुष्टि नहीं है कि उसने पहले ली गई किताब वापस कर दी है।

जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए बच्चों से बार-बार बात की जाती है। इसलिए 20 मिनट तक श्रीकान्त के निवेदन करते रहने और मेरे शान्ति से मना करते रहने के बाद उसने अपने दोस्त को धीरे से कोहनी मारकर अपने साथ कक्षा में वापस लौटने को कहा।

मैंने उसे अपनी सभी बातचीतों के दौरान इतना दृढ़ कभी नहीं देखा था, जिसने मुझे यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि क्या सच में मैंने कोई ग़लती कर दी थी; और क्या यह सच था कि उसने किताब वापस कर दी थी। मैंने रजिस्टर को दोबारा

जाँचने का फ़ैसला किया। अब मैंने उसमें एक एंट्री देखी, जिसमें वापसी की तारीख़ कुछ अस्पष्ट थी। उसे सन्देह का लाभ देने का फ़ैसला करते हुए, मैंने वह किताब उठाई जो उसे चाहिए थी और उसकी कक्षा में चली गई और कहा, "श्रीकान्त तुम यह किताब ले सकते हो।"

उसके चेहरे की मुस्कान निर्मल आनन्द से भरी थी, जो मुझे हमेशा याद रहेगी। उसके अन्दर एक अविश्वास का भाव भी था। मानो वह पूछ रहा हो, "क्या आप सच में मेरे लिए आई हो? क्या आप सच में पूरी कक्षा के सामने यह स्वीकार कर रही हैं कि मैंने किताब वापस कर दी थी?" अब मुझे पूरी तरह से यक़ीन हो गया था कि किताब कहीं-न-कहीं पुस्तकालय में ही थी और इस बात का बुरा भी लग रहा था कि मैंने उसे पहले सन्देह का लाभ नहीं दिया।

दिन सामान्य तरीक़े से बीता। जब छुट्टी की घण्टी बजी तो कक्षा-4 का एक लड़का गलियारे में मेरे पास आया और उसने कहा कि वह एक किताब लौटाना चाहता है और उसने मुझे वह दे दी। मैंने उसका शुक्रिया अदा किया, वापस पुस्तकालय गई और दिन की आख़िरी एंट्री करने बैठी तो पता चला कि वह किताब *एवरीथिंग बिग कैट्स* थी।

मेरा मन एक बार फिर तरह-तरह के विचारों में डूब गया। क्या सच में श्रीकान्त ने किताब वापस कर दी थी? क्या इस दूसरे लड़के ने उसे ले लिया था? रजिस्टर में दोबारा किसी को वह किताब जारी किए जाने का कोई रिकॉर्ड नहीं था। क्या मेरी और से चूक हुई होगी? मैं सोच में पड़ गई कि कहीं मैंने श्रीकान्त पर केवल अपनी पहले से बनाई हुई छवि के कारण अविश्वास तो नहीं किया था।

मेरे दिमाग़ में चल रहे प्रश्नों का उत्तर नहीं मिला। रास्ता अभी लम्बा है और कई और संवाद व घटनाएँ आपसी विश्वास और ज़िम्मेदारी की भावना पैदा कर सकती हैं।

इस घटना से सीख

अधिकांश शिक्षक मुख्य रूप से बच्चों के संज्ञानात्मक सीखने और विकास पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। उनके सामाजिक-भावनात्मक विकास पर सचेत रूप से कुछ ख़ास ध्यान नहीं दिया जाता। उनके समग्र विकास के लिए, संज्ञानात्मक कौशलों के विकास के साथ-साथ सामाजिक-भावनात्मक कौशल सिखाना ज़रूरी है। बदलाव लाने के लिए हर दिन छोटे-छोटे सचेत प्रयास करना महत्त्वपूर्ण है।

इन क्षेत्रों में विकास हेतु निरन्तर संवाद करने के लिए रोज़ का स्कूल और घटनाएँ हम सभी के लिए एक अच्छी रूपरेखा प्रदान करती हैं। संज्ञानात्मक और सामाजिक-भावनात्मक क्षेत्र एक-दूसरे पर निर्भर हैं। कभी-कभी यह लगातार की जाने वाली छोटी-छोटी चीज़ें या समय पर ध्यान में ली जाने वाली छोटी चीज़ें होती हैं जो बच्चे के सामाजिक-भावनात्मक विकास में अत्यधिक योगदान दे सकती हैं।

मुझे हासिल हुई समझ

बच्चों के साथ काम करने की मेरी समझ में, मैंने कुछ संकेतकों का पालन करने की कोशिश की है, जिनके द्वारा, मुझे यक़ीन है कि शिक्षकों और बच्चों के बीच अधिक भरोसेमन्द सम्बन्ध बनते हैं —

- पहली और सबसे महत्त्वपूर्ण बात कि बच्चे के साथ सम्मान और देखभाल भरा व्यवहार रखना।
- कक्षा में प्रत्येक बच्चे को कार्यों को सम्भालने के अवसर दें। अन्यथा, लगभग हमेशा ही अधिक ज़िम्मेदार बच्चे ही स्कूल के अधिकांश कार्यों को सम्भालते हुए पाए जाएँगे।
- धीरे-धीरे परिणामों और पुरस्कारों के तरीक़े को लागू करें, हालाँकि ज़रूरी नहीं कि इसी क्रम में, क्योंकि यह सम्भव है कि जब किसी बच्चे को पुरस्कृत किया जाता है, तो उसके सकारात्मक परिणाम हो सकते हैं।
- ग़लतियों की अनुमति दें।
- बच्चे का नज़रिया सुनें और उसके प्रयास पर ध्यान दें, न कि परिणाम पर, यानी कि इस पर नहीं कि बच्चा सफल होता है या नहीं।
- सकारात्मक रवैयों और कार्यों को और मज़बूती दें।
- इस पर लगातार संवाद करें कि कोई बच्चा किसी ख़ास ढंग से ही कोई चीज़ क्यों कर रहा है।
- बच्चों और शिक्षकों, दोनों को सोच-विचार के लिए समय प्रदान करें।
- बच्चों के व्यवहार को ढालने के लिए ज़रूरी है कि शिक्षक निरन्तर एक समान प्रयास करते रहें।
- भयमुक्त वातावरण का निर्माण करें।

बदलाव के लिए समय और धैर्य चाहिए

हमारे प्रयासों का प्रभाव शायद हमारे कामकाजी जीवन में दिखाई न दे, लेकिन बीते समय ने मुझे सिखाया है कि सकारात्मक प्रयास का प्रभाव समय के साथ आता है और ज़्यादातर तब, जब उसकी अपेक्षा सबसे कम होती है।

हमारी पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और प्रत्येक कक्षा में बच्चों की संख्या का विस्तार, एक शिक्षक के लिए प्रत्येक बच्चे के सभी विकासात्मक आयामों पर ध्यान केन्द्रित करना कठिन बना देता है। शिक्षकों के रूप में, हमें यह समझना ज़रूरी है कि शिक्षकों

और विद्यार्थियों के बीच प्यार, विश्वास और जवाबदेही का पनपना एक दोतरफ़ा प्रक्रिया है और स्कूल में ख़ुशहाली का मतलब, शिक्षकों और विद्यार्थियों, दोनों की ख़ुशहाली है।

ख़ुशहाली का वातावरण बनाने का मतलब ख़ुद हमारा मूल्यों को दोबारा सीखना है। यदि हम बच्चों को ख़ुद के प्रति सचेत रहने और अपनी परवाह करने की प्रवृत्ति को अपनाने और उसे आत्मसात करने में सक्षम बनाते हैं, तो इसका परिणाम कुल मिलाकर सकारात्मक व्यवहार के रूप में सामने आ सकता है। यदि इसे क्रमिक और समेकित तरीक़े से किया जाता है, तो इससे बच्चों को भरोसेमन्द रिश्तों को समझने और उनको क़ायम रखने में मदद मिलेगी, जिससे पूरे स्कूल की संस्कृति में सकारात्मक बदलाव आएगा।

**बच्चों की पहचान सुरक्षित रखने के लिए नाम बदल दिए गए हैं।*

विनीता रोचा अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में रिसोर्स पर्सन हैं और बेंगलूरु शहर के सरकारी स्कूलों के साथ काम करती हैं। वे पिछले एक दशक से अधिक समय से शिक्षा के क्षेत्र में पेशेवर रूप से कार्यरत हैं। उनका मानना है कि बच्चे उन्हें उनके अपने विकास में मदद करते हैं। उनसे *vinita.rocha@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : सुनन्दा दुबे **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय